श्री हनुमान आरती

ॐ आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ।।

अंजनि पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीरा रघुनाथ पठाए, लंका जारि सिया सुधि लाए ।।

लंका सो कोट समुद्र सीखाई, जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज सवारे ।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि संजीवन प्राण उबारे ।
पैठि पाताल तोरि जम कारे, अहिरावण की भुजा उखारे ।।

बाएं भुजा असुरदल मारे, दाहिने भुजा संत जन तारे ।
सुर नर मुनि जन आरती उतारें, जय जय जय हनुमान उचारें ।।

कंचन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अंजनी माई ।
जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ परम पद पावे ।।

लंक बिध्वंश किन्ही रघुराई, तुलसी दस स्वामी आरती गाई ।
आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।